ISSN No: 2455-734X (E-Journal)
An Inter-Disciplinary National Peer & Double Reviewed e-Journal of Languages, Social Sciences and Commerce

The Churning
Uma Arts & Nathiba Commerce Mahila
College, Gandhinagar, Gujarat, India

भारतीय परंपरा में उच्च शिक्षण की विभावना *

डॉ। माधवी उपाध्याय

भारतीय सभ्यता अनादिकाल से विश्व को ज्ञान मार्ग का पथ प्रदर्शन कराती रही है। शताब्दीयों से अविच्छिन्न प्रवाहित हमारा ज्ञानराशि आज भी अक्षुण्ण है। विविध गुरुकुल परंपराएँ विशिष्ट ज्ञान की विभिन्न और क्लिष्ट विधाओं को प्राचीन भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली के हि माध्यम से हि सफलता पूर्वक संरक्षित तथा संचित कर पायी है। इस अमूल्य ज्ञान रूप धरोहर को आज हम अक्षत स्थिति में प्राप्त कर सके है, यही हमारी प्राचीन उच्च शिक्षण प्रणाली सुयोग्य तथा त्रुटी रहित होने का प्रमाण है।

तैत्तिरीय उपनिषद् का दीक्षांत उपदेश विश्व प्रसिद्ध है। विद्यार्थी जब स्नातक (graduate) होता है तब उसे दीक्षा (degree) दी जाती है। यही दीक्षा समारोह (convocation) में गुरु अपने शिष्यों को आचरण विषयक अंतिम उपदेश देते है। नीतिपूर्वक तथा विनयशीलता से जीवन व्यपन करने के लिए यहाँ गुरु अपने स्नातक शिष्यों को विमर्श देते है। (१) यह उपदेश विश्व की प्राचीनतम भारतीय उच्चशिक्षण पद्धति का हस्तामलकवत् सुस्पष्ट प्रमाण है।

भारतीय जीवन रीति -

१. धर्म
२. अर्थ
३. काम
४. मोक्ष

नामों से सुप्रसिद्ध चार पुरुषार्थों की प्राप्ति को जीवन का लक्ष्य मानती है। इन में से सर्वोच्च पुरुषार्थ 'मोक्ष' है। और यही मोक्ष यदि हम प्राप्त करना चाहे तो उसका साधन ज्ञान ही है। हमारे उपनिषद् कहेते है की 'ज्ञान के बिना मोक्ष संभवित नहीं है।'(२) ईशावास्यम् में 'विद्या' तथा 'अविद्या' दोनों का ज्ञान रखने वाले का महिमा गान हुआ है।(३) यहाँ मोक्ष प्राप्त करने वाली 'विद्या' अर्थात् परब्रह्म विषयक ज्ञान तथा इस संसार में स्वयं तथा अपने परिवार के जीवन व्यपन हेतु उपयुक्त 'अर्थकरी' विद्या को 'अविद्या' नाम दिया गया है। ध्यातव्य है की भारतीय ज्ञान परंपरा दोनों को सामान महत्त्व देती है। जीवन व्यपन हेतु उपयोगी विद्या को भी नकारा नहीं गया है, क्षुल्लक नहीं माना गया है। वैदिक विचार परंपरा जीवन का महिमागान करती है अत: एव अध्ययन, उद्यम, कृषि समेत मानव जीवन का विकास करने वाले प्रयासों का वैदिक साहित्य में बड़ा ही आदर किया गया है।

हमारी संस्कृति मानव आयु को १०० वर्षों का मानते हुए इसका २५ – २५ वर्षों में विभाजित करती है। इन प्रत्येक समय-खंड के लिए हमारे ऋषिओं ने विशेष उद्देश्य दिए है , इन उद्देश्यों को पूर्ण करने हेतु मनुष्यको निष्ठा से अपना कर्तव्य करते रहेना चाहिए। इसीलिए इन विभागों को 'आश्रम' नाम दिया गया है। यह पुरुषार्थ इस प्रकार है।

१. 'ब्रह्मचार्याश्रम (वर्ष २५से १)
२. गृहस्थाश्रम (वर्ष ५०से २६)
३. वानप्रस्थाश्रम (वर्ष ७५से ५१)
४. संन्यासाश्रम (वर्ष १००से ७६)

यहाँ जीवन के सबसे श्रेष्ठ समय-खंड बाल्यावस्था तथा युवावस्था को 'ब्रह्मचार्याश्रम' के नाम से परिभाषित किया गया है और इसमें मात्र विद्याध्ययन को ही परम लक्ष्य माना गया है। परंपरा अनुसार बाल्यावस्था के पञ्च वर्ष पश्चात यज्ञपवित धारण करके व्रत एवं नियमो सहित विधि पूर्वक विद्यारंभ किया जाता था। 'ब्रह्मचार्याश्रम' की समयावधि को देखते हुए हम यह निश्चित कर सकते है की प्रारंभ के १० वर्ष को यदि प्राथमिक अथवा मूलभुत तथ्यों के अध्ययन के लिए समर्पित मान लिए जाये तथापि एक दशक का समय खंड हम उच्च शिक्षण अथवा विशेष ज्ञान विधा के अध्ययन के लिए समर्पित मान सकते है।

भारतीय परंपरा ब्राह्मणों (अर्थात् ब्रह्म की उपासना, ज्ञान की उपासना करने वाले) को षड् वेदांगो के सहित वेदों का अध्ययन 'निष्कारण' करने की आज्ञा देती है।[४] स्वाभाविक है की यह सभी ६ वेदांग[५] शास्त्रीय सिद्धांतो से युक्त ऐसे ग्रंथो का समूह है जिसे हम प्राथमिक शिक्षण का विषय नहीं मान सकते यह अत्यंत विशिष्ट ज्ञान है। वेदांग तथा अन्य शास्त्रीय ग्रन्थ का अध्ययन करने के लिए उत्सुक छात्र यदि इस ज्ञान का 'अधिकारी' है तभी उसे गुरु तत्संबंधी शिक्षा देगा अन्यथा नहीं। संस्कृत में आलेखित अगणित अत्यंत क्लिष्ट तथा जटिल शास्त्रीय ग्रंथो का यदि विहंगावलोकन किया जाये तो यह अवश्य प्रतीत होगा की निश्चय ही यह समस्त उच्च शिक्षण के ही विषय है।प्राय: संस्कृत भाषा में लिखित शास्त्रीय ग्रंथो के प्रारंभ में 'अनुबंध चतुष्टयं '[६] द्वारा ग्रन्थ के-

१. अधिकारी
२. प्रतिपाद्य विषय
३. सम्बन्ध
४. प्रयोजन

को स्पष्ट किया जाता है। इस में जो अधिकारी के लक्षण दिए जाते है उसे देखते ही यह निश्चित हो जाता है की यह एक ऐसा अध्ययन है जो पूर्व अध्ययन की अपेक्षा रखता है।

प्राचीन भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी की प्रवेश योग्यता पर भी ध्यान दिया जाता था। सामान्यत: हर एक विद्या परंपरा, ग्रन्थ परंपरा अथवा गुरुकुल परंपरा अपनी विद्या के 'अधिकारी' विद्यार्थी को अपनी परंपरा द्वारा दिए गए अधिकारी के लक्षणो के आधार पर ही चयनित कराती थी। निदर्शन के रूप में शांकर वेदांत के ग्रन्थ 'वेदांतसार' के लक्षणों को देखते है। तदनुसार इस ग्रन्थ तथा इस परंपरा में अभ्यास करने के लिए वही विद्यार्थी 'अधिकारी' है जो वेद और वेदांग का 'विधिपूर्वक' अर्थात औपचारिक रूप

से अध्ययन कर चूका है। तत् पश्चात ही इस विषय के विशेष अध्ययन के लिए इस विद्या शाखा में प्रवेश की आकांक्षा रखता हो। इस के उपरांत भी प्रवेशोत्सुक विद्यार्थीओं से कुछ विशेष अपेक्षाएं भी रखी जाती थी। (७) मुण्डकोपनिषद के अध्ययन के लिए तो अति कठिन 'शिरोव्रत' का विधान है। (८) इन निदर्शनों के उपरांत भी संस्कृत ग्रंथो में ऐसे अनेकानेक लक्षणों को अध्ययन की पूर्व शर्त के रूप में रखा गया है। जिसकी चर्चा विस्तार भय से नहीं की जा सकती।उपनिषद् परंपरा के प्राचीनतम आधारों से अनुमोदन प्राप्त करके अब हम प्राचीन भारतीय उच्च शिक्षण व्यवस्था का विहंगावलोकन करते है।

प्राचीन भारत में उपनयन संस्कार से प्रारंभित विद्याभ्यास निरंतर प्राय: दो दशक पर्यन्त गुरुकुल में निवास करके ही किया जाता था। कुछ विद्या केंद्र अपने प्रदेश में ही होते थे जहां प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की जाती थी। जब की विशेष अध्ययन के हेतु विद्यार्थी सुदूर के विश्वविद्यालयों तक जाते थे, परन्तु प्रत्येक विद्यार्थी रहेता तो गुरुकुल में ही था। शिक्षण प्राप्त करने के लिए जो एकाग्रता एवं समर्पण आवश्यक है वह इस तरह गुरु की छत्रछाया में छात्रालय निवास से सहज हो जाते थे। साथ ही साथ जीवन में श्रम का महत्त्व, साथ मिलकर जीने के गुण, निरभिमान जैसे अनेकानेक गुण छात्र में अनायास ही विकसित हो जाते थे। गुरु के साथ भी पूज्यभाव पूर्ण आत्मीयता बनी रहती थी। कठोपनिषद् का शांति पाठ इसी गुरु-शिष्यों के साहचर्य को घोषित करता है।(९) निसंदेह यह शिक्षा प्रणाली समस्त विश्व में प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक के समन्वित अभ्यासक्रम के रूप में अपूर्व है।

यही कारण है कि भारत के शिक्षण संस्थान न केवल भारतीय अपितु विश्व समस्त के छात्रों के लिए भी शताब्दीओं पर्यन्त आकर्षण का केंद्र बने रहे। भारत वर्ष की पुण्यभूमि पर तक्षशिला, नालंदा विक्रमशिला जैसे अनेक सुविख्यात विश्वविद्यालय थे। आधुनिक पाकिस्तान के रावलपिंडी से निकट स्थित प्राचीन तक्षशिला विश्वविद्यालय ईसा पुर्व ५०० वर्षों से परम प्रसिद्ध था। आचार्य चाणक्य इसी विश्वविद्यालय के छात्र तथा प्राध्यापक रह चुके है। अनेक विषय यहाँ के अभ्यासक्रम में समाविष्ट रहेते थे। इस विश्वविद्यालय की ख्याति का प्रमाण यह है कि इस उच्च शिक्षण संस्थान की छात्र संख्या ईसा पूर्व के समय से दस सहस्र मानी जाती थी। जो उस समय की जनसंख्या को ध्यान में लेते हुए आज के किसी भी बड़े विश्वविद्यालय की तुलना में अधिक है।

बिहार में स्थित नालंदा विश्वविद्यालय भी शताब्दीयों पर्यन्त विश्व को ज्ञान का प्रकाश देने वाला दीपदंड बना रहा। यहाँ पर भी समस्त संसार से विद्या के अर्थी आते थे। विशेष रूप से दक्षिण पूर्व के देशों से विदेशी छात्र अविरत आते रहते थे। बौद्ध तत्वज्ञान के अभ्यास का यह एक महत्वपूर्ण केंद्र था। विज्ञान, साहित्य, आध्यात्म जैसे अनेकविध विषयों का यहाँ अध्ययन, चिंतन तथा संशोधन होते रहेते थे। प्राचीन ग्रंथो का अभ्यास तथा नवीन ग्रंथो का लेखन चलता रहेता था। चतुर्थ शताब्दी तक इसकी ज्ञान-सौरभ समस्त विश्व को सुवासित करने लगी थी।

बिहार का ही विक्रमशिला विश्वविद्यालय अष्टम - नवम शताब्दी में अपनी तेजस्विता का परिचय दे चूका था। यहाँ सर्वाधिक विद्यार्थी तिब्बत से आते थे। इस विश्वविद्यालय में प्रवेश परीक्षा के उपरांत ही प्रवेश मिलाता था। प्रवेश उत्सुक छात्रों को विश्वविद्यालय की बाहरी सीमाओं पर स्थित परीक्षा खंडो में निरंतर चलती परीक्षाओं में हिस्सा लेना पड़ता था। उत्तीर्ण होने पर ही उसे विश्वविद्यालय के परिसर में क्रमशः 'प्रवेश' मिल पाता था। छात्रों का यहाँ ताँता लगा रहेता था।

इन प्रमुख शिक्षण संस्थानों के उपरांत भारत में उच्च शिक्षा के लिए अनेक विकल्प उपलब्ध थे। भारत के प्रत्येक प्रदेशों में गुरुओं के आश्रम तथा राज्याश्रित मंदिर विद्या के सुलभ केंद्र थे। वल्लभी, उज्जयिनी, अमरावती आदि भी विद्या के धाम थे। वाराणसी तो

प्राचीन काल से ही विद्या का केंद्र बना रहा है। पूर्व, पश्चीम, उत्तर तथा दक्षिण सभी दिशाओं में भारत के विलक्षण विद्यापीठ विद्यमान थे। जहां अनेकविध विद्याशाखाओं में अध्ययन, अध्यापन तथा अनुसन्धान होते रहेते थे।

अधुना यह ध्यातव्य है कि भारतीय परंपरा में उच्च शिक्षा की कौन कौन सी विधाएँ उपलब्ध थी। हमें यह जानकर आश्चर्य होगा की प्राचीन भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली में प्राय: वह सभी विधाएँ थी जो आधुनिक शिक्षा प्रणाली में है। निदर्शन रूप यहाँ पर कतिपय ऐसी ही विद्याशाखाओं की सूचि दी जा रही है जिस विषय के अनेक ग्रन्थ संस्कृत ज्ञाननिधि का हिस्सा है तथा जो आधुनिक समय में भी उच्च शिक्षा का विषय है। यह अवश्य स्मरण रहे की भारतीय उच्च शिक्षा के विषय तथा उसकी प्रशाखाएँ यहाँ अंकित सूचि से संख्या में कहीं अधिक है। ३२ विद्याएँ, ६४ कलाएँ जैसी सुप्रसिद्ध सूचिओं को भी यहाँ पर सम्मिलित नहीं किया गया है। लक्षणशास्त्र, कोशग्रंथ (dictionaries, thesaurus, encyclopaedias) जैसे संदर्भ ग्रंथों को यहाँ सूचि में विस्तार भय से समाविष्ट नहीं किया गया है।

निम्नलिखित प्रमुख आधुनिक उच्च शिक्षा के विषय प्राचीन भारत में भी उच्च शिक्षा के विषय थे। जिसमें – मानविकी विद्याएँ (Humanities) जैसे कि -

- साहित्य (Literature)
- काव्यशास्त्र (Poetics)
- दर्शनशास्त्र (Philosophy)
- न्यायशास्त्र (Logic)
- धर्मशास्त्र (Law)
- इतिहास (History)
- भौगोलिक शास्त्र (Geography)

कला क्षेत्र में (Fine Arts and Applied Arts)

- चित्रकला (Painting)
- शिल्पकला (sculpture)
- नृत्यकला (Dance)
- नाट्यकला (Drama)

वाणिज्य तथा प्रबंधन विद्याएँ (Commerce and Management) जैसे कि –

- कृषि (Agriculture)
- अर्थशास्त्र (Commerce and Political science)

यंत्र विद्याएँ (engineering) जैसे कि -

- वास्तु शास्त्र)Architecture(
- भूगर्भ जल विद्या (The science of Ground water)
- नौकाविद्या (Ship Designing)
- धातुविद्या (Metallurgy)

- खनिज विद्या)Mineralogy)
- विमानविद्या (Aerospace engineering)
- शस्त्र तथा अस्त्र विद्याएँ (Weapons and ballistics)

आधुनिक काल में शुद्ध विज्ञान (Pure Sciences) के रूप में जानी जाती

- भौतिकशास्त्र (Physics)
- रसायणशास्त्र (Chemistry)
- शरीरशास्त्र (Biology)
- वनस्पति शास्त्र (Botany)

जैसी विद्याएँ तथा गणित (Mathematics) की शाखाएँ जैसे कि -

- अंक गणित)Arithmetic)
- बिज गणित (Algebra)
- त्रिकोणमिति (Trigonometry)
- ज्योतिषीय गणित (Astrological mathematics)
- खगोल विद्या (Astronomy)

स्वास्थ्यविज्ञान (Health sciences) जैसे कि –

- आयुर्वेदिक स्वास्थ्य सिद्धांत (Health theories)
- औषध विज्ञान (Pharmacology)
- शल्यचिकित्सा (Surgery)

इत्यादि।

विस्तारभय से यहाँ पर कुछ ही विद्या शाखाओं का उल्लेख संभावित हो पाया है। इन सभी विधाओं का मात्र संक्षिप्त परिचय भी एक बृहद अध्ययन का रूप ले सके ऐसी संभावना इस चिंतन के विषय की है बस इतना भी अंगुलिनिर्देश यदि हो सके तो भी यह कार्य सार्थक होगा।

इस प्रकार औपनिषदिक परंपरा के आलोक में पदक्रम करते हुए हमने जीवन के चार पुरुषार्थ तथा चार आश्रमों में में व्याप्त ज्ञान तत्त्व के महत्त्व का परिचय पाते हुए प्राचीन भारतीय उच्च शिक्षण प्रणाली, प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालयों तथा प्राचीन भारतीय विद्या शाखाओं का ईशत दर्शन किया। इस लघु अभ्यास से यह सिद्ध होता है कि प्राचीन भारत में गौरवान्वित उच्च शिक्षण प्रणाली अवश्यमेव विद्यमान थी। इति अलम्।

सत्यं वद् । धर्मं चर । स्वाध्यायान्मा प्रमदः ।
आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः ।
सत्यान्न प्रमदितव्यम् । धर्मान्न प्रमदितव्यम् ।
कुशलान्न प्रमदितव्यम् । भूत्यैन प्रमदितव्यम् ।
१ . स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम् ॥ १॥

/१- ११/१ तैत्तिरीय उपनिषद्

२ .विद्यायां परं च श्रेय: केवलाया विद्याया एवेति सिद्धम् ।

-४/११/१ तैत्तिरीय उपनिषद् शाङ्कर भाष्य (अन्त भाग)

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयꣳ सह ।
३ . अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते ॥

– ईशावास्यम् - ७

ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्म: षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेय इति.

- आह्निक १, व्याकरण महाभाष्य

४ .

छन्द:पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते .

ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्र मुच्यते ..

शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतं .

तस्मात साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते..

- ४१,४२ पाणिनीय शिक्षा

५.

६. तत्र अनुबन्धो नाम अधिकारिविषयसम्बन्धप्रयोजनानि ॥

५, वेदान्तसार:

अधिकारी तु विधिवदधीतवेदवेदाङ्गत्वेनापाततोऽधिगताखिल-
वेदार्थोऽस्मिन् जन्मनि जन्मान्तरे वा काम्यनिषिद्धवर्जनपुरःसरं
नित्यनैमित्तिकप्रायश्चित्तोपासनानुष्ठानेन निर्गतनिखिलकल्मषतया
७. नितान्तनिर्मलस्वान्तः साधनचतुष्टयसम्पन्नः प्रमाता ॥ ६॥

-६, वेदान्तसार:

क्रियावन्तः श्रोत्रिया ब्रह्मनिष्ठाः
स्वयं जुह्वत एकर्षिं श्रद्धयन्तः ।
तेषामेवैतां ब्रह्मविद्यां वदेत
शिरोव्रतं विधिवद् यैस्तु चीर्णम् ॥
८.

०१/०३/१०- मुण्डकोपनिषद्

ॐ सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु । सहवीर्यं करवावहै ।
तेजस्वि नावधीतमस्तु । मा विद्विषावहै ॥
९. ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

- शांतिपाठ कठोपनिषद् ,

Author's Profile

Madhvi Upadhyay, Ph. D. Associate Professor, Government Arts College, Sector – 15, Gandhinagar.